प ह चा न

राजभाषा पत्रिका

2022

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

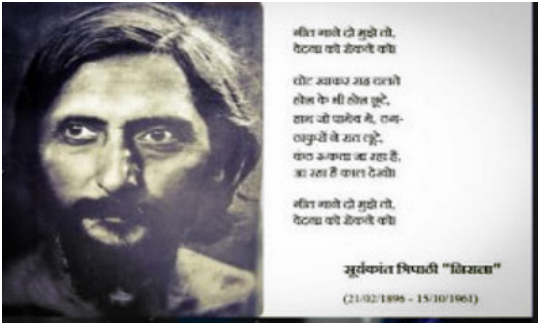

गीत गाने दो मुझे तो,
वेदना को रोकने को।
चोट खाकर राह चलते
होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे, ठग-
ठाकुरों ने रात लूटे,
कंठ रुकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।
गीत गाने दो मुझे तो,
वेदना को रोकने को।
सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"
(21/02/1896 - 15/10/1961)

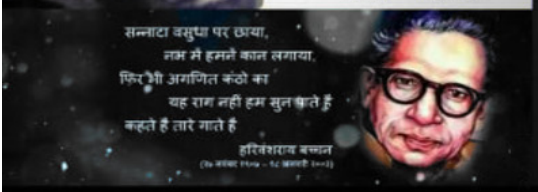

सन्नाटा वसुधा पर छाया,
नभ में हमने कान लगाया,
फिर भी अगणित कंठो का
यह राग नहीं हम सुन पाते हैं
कहते हैं तारे गाते हैं
हरिवंशराय बच्चन

ठंडे पानी से नहलाती
ठंडा चन्दन उन्हें लगाती
उनका भोग हमें दे जाती
तब भी कभी न बोले हैं
मां के ठाकुर जी भोले हैं।
महादेवी वर्मा

कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं हैं
कला दिखती तो यथार्थ हैं,
पर यथार्थ होती नहीं हैं।
उसकी खूबी यही हैं
की यथार्थ मालूम हो !
मुंशी प्रेमचंद

मध्यवर्गीय नैतिकता से
मुझे घृणा है. यह कितना
बड़ा पाखंड है. सब कुछ
दबा रहता है.
सपने देखने का अधिकार
पहला मौलिक अधिकार
होना चाहिए. हाँ, सपने
देखने का अधिकार.
महाश्वेता देवी

प्रतिरोध
की ताकत
कलम
चित्रा मुद्गल

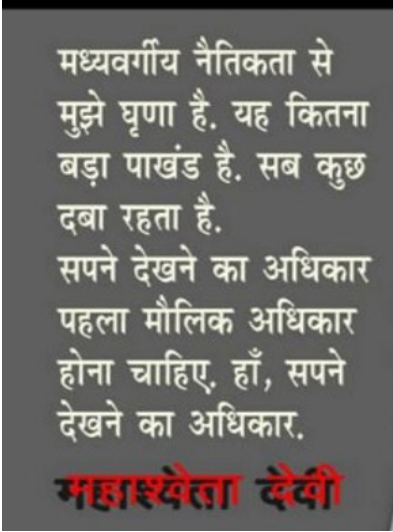

पहचान - सितंबर 2022

संरक्षक

एल षानिल लाल

कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक

एन वी रविदेव

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं

मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

रमेश ओ

प्रबन्धक (राजभाषा/मानव संसाधन)

सम्पादन सहयोगी

अरुण एम वी, अ॰कार्यालय सहायक (हिन्दी)

विशेष सहयोग

मिथुन

अ॰वरिष्ठ सिस्टम अधिकारी

संपर्क

मुख्य संपादक

एचओसीएल, अंबलमुगल

एरणाकुलम, कोची - 682302

दूरभाष 04842727201 / 298

- केवल आंतरिक परिचालन के लिए
- पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से एचओसीएल का सहमत होना आवश्यक नहीं है|

सूची

- पहचान – सितंबर 2022
- पहचान – सम्पादक मंडल
- संदेश – निदेशक (वित्त)
- संदेश - अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
- संदेश - कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी
- माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री के भाषण का मुख्य अंश
- रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक
- लेख - असफलता
- कविता - यादें बंद रखा है
- वी पी अप्पुकुट्टा पोदुवाल - भारतीय स्वतंत्रता सेनानी
- गीतांजलि श्री - बुकर पुरस्कार विजेता
- सकारात्मक होने के लिए 10 बातें
- संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति द्वारा मुख्यालय का निरीक्षण
- हिन्दी दिवस समारोह 2022 एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन-सूरत, गुजरात
- कविता – हिन्दी भाषा
- स्वच्छ भारत अभियान - गतिविधियां
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 और भारतीय भाषाएँ
- चित्र
- हिन्दी उद्धरणियाँ
- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस - 2022
- हिल पैलेस संग्रहालय का संक्षिप्त विवरण
- एचओसीएल मई दिवस खेल
- हाइड्रोजन पेरोक्साइड – 6%

संदेश

भाषा निरंतर परिवर्तनषील होती है और यह बदलावों को स्वीकार करके ही आगे बढ़ती है। किसी भी देश का इतिहास, लोगों का रहन-सहन, संस्कृति आदि का भाषा के विकास-यात्रा पर बहुत अधिक असर पड़ता है। हिंदी भाषा के संबंध में विचार करें तो यह अवश्य पाया जाता है कि इसमें कई भाषाओं के शब्दों का मिलन हुआ है। व्यापक स्तर पर हिंदी के प्रयोग के बारे में अब कहने की उतनी आवश्यकता नहीं है। दुनिया जानती है कि हिंदी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज भारत के बाहर अमेरिका, ब्रिटेन, यूएई, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, न्यूज़िलैंड, सिंगापुर, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, यमन, युगाँडा, नेपाल आदि देशों में भी हिंदी बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में, प्रौद्योगिकी के साथ हिंदी का जुड़ना बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। इस संबंध में दिलचस्प बात यह है कि हिंदी को कुछ समय पहले तक 'तकनीक' और 'रोज़गार' की भाषा मानने में हिचक हो रही थी। उन तमाम बंधनों को सफलतापूर्वक तोड़ कर यह भाषा अपने कदम आगे बढ़ाती जा रही है। इस संदर्भ में माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स का एक कथन उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा था "जब बोलकर लिखने की तकनीक उन्नत हो जाएगी, हिंदी अपनी लिपि की श्रेश्ठता के कारण सर्वाधिक सफल होगी"। आज यह बात हम चरितार्थ होती दिख रही है। इसी प्रकार तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी को अपनाती जा रही हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के इस लक्ष्य को साकार करने के लिए यह कार्यालय कटिबद्ध है, जिसका सबूत है राजभाषा पत्रिका "पहचान"। इस कार्यालय का सतत् प्रयास रहा है कि कार्यालय की गतिविधियों को भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी में भी प्रकाशित करें ताकि ज्यादा-सा-ज्यादा लोग इन जानकारियों से लाभान्वित हो सकें। इसमें "पहचान' खरी उतरी है।

"पहचान" के इस अंक के सफल प्रकाषन के लिए संपादक मण्डल के सदस्यों को साधुवाद देता हूँ और इस पत्रिका के उज्ज्वल भविश्य की कामना करता हूँ।

(योगेंद्र प्रसाद शुक्ला)
निदेशक (वित्त)

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED

(भारत सरकार का उद्यम A Government of India Enterprise)

संदेश

प्रिय साथियों,

"हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ"

देश भर में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी केंद्र सरकार की कामकाज की भाषा है अर्थात राजभाषा है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में हिंदी संपर्क भाषा की भूमिका भी निभा रही है। आज हिंदी केवल राजभाषा नहीं बल्कि राष्ट्र की पहचान है और देश की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है।

मुझे इस बात की खुशी है कि राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 14 और 15 सितम्बर को सूरत, गुजरात में किया जा रहा है। सरकार की तरफ से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। वैसे ही हमारे कार्यालय में भी हिंदी पखवाड़ा 14 सितम्बर से शूरु हो रहा है। इस अवसर पर आयोजित सभी कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेकर आप हिंदी के प्रति हमारे कर्तव्य का पालन करें।

जून 2022 को नई दिल्ली में सम्पन्न मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं राजभाषा नीति के समुचित अनुपालन पर ज़ोर दिया गया है। खुशी की बात है कि राजभाषा के उत्तम कार्यान्वयन के लिए मंत्रालय द्वारा हमारे कार्यालय को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। सभी कार्मिकों को बधाई एवं अभिनंदन। इस जोश को बनाए रखें।

आपसे अनुरोध है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाएँ साथ ही साथ अपने दैनिक कामकाज में जैसे टिप्पणी, मसौदे, पत्राचार खासकर ईमेल में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। सरल हिंदी का प्रयोग करने से इसकी स्वीकृति बढ़ेगी तथा प्रयोग भी बढ़ेगा। हमें राजभाषा हिन्दी के प्रयोग करने में गर्व करना चाहिए।

आइए हम सब मिलकर सरकार की राजभाषा नीति संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करते हुए अपने कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे।

जय हिन्द।

(सजीव बी)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

नवीं मुंबई
13.09.2022

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
Hindustan Organic Chemicals Limited
अंबलमुगल कोची, Ambalamugal,Kochi

कार्मिक एवं प्रशा/राजभाषा/2022 दिनांक: 13/09/2022

अपील

14 सितंबर,1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। इसीलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को "हिंदी दिवस" के रूप में मनाया जाता है। स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी ने देशवासियों के लिए संपर्क भाषा की भूमिका निभाई। आज हिंदी देश में सबसे अधिक बोली जानेवाली भारत की पहचान की भाषा है। विदेशी दासता के सभी चिह्न हटाने के इस अवसर पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का महत्व और बढ़ जाता है। हर एक राष्ट्र की अपनी भाषा होती है। विविधता में एकता वाले और बहुभाषी भारत में सभी को एकसूत्र में जोडनेवाली भाषा हिंदी है। हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। भारत के सभी के विकास में अपनी भाषाओं का महत्व है।

आपको विदित है, जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज़ होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी। हिंदी आजकल ज्ञान -विज्ञान की भाषा बन गयी है। तकनीकी रूप से सशक्त भाषा के रूप में हिंदी विश्व में अपना स्थान हासिल कर रही है। संयुक्त संघ में एक भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग शूरु हो गया है। आपको मालूम है केंद्र सरकार के सभी कार्यक्रमों में हिंदी का प्रयोग आजकल सबसे अधिक हो रहा है। इसीलिए हमें भी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

भारतीय संविधान की मूलभावना को सुदृढ़ करते हुये हिंदी का प्रयोग करना हमारा कर्तव्य एवं दायित्व है। इसके लिए एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करने हेतु हमारी इकाई में 14 से 29 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अपने सभी कामकाज में सरल हिन्दी का प्रयोग करें और पत्रों एवं दस्तावेज़ों पर हिंदी में हस्ताक्षर करें, ज़्यादा से ज़्यादा सरकारी कार्य यथा टिप्पणी, मसौदे और पत्राचार कार्य हिन्दी में किया जाए। आइए, इस अवसर पर हम सब मिलकर सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करेंगे और अपने कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करेंगे।हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंदी, जय हिन्द।

(एल षानिल लाल)
कार्यापालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री के भाषण का मुख्य अंश

देश के तीव्र विकास के लिए राष्ट्रीय संवाद में हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता है। इसके लिए हमें हिन्दी भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। यह हमारे सांस्कृतिक सामंजस्य और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती है। जिस तरह राजभाषा हिन्दी के संबंध में संविधान में व्यवस्था की गई है, राजभाषा हिन्दी को केंद्रीय हिन्दी समिति, संसदीय राजभाषा समिति के माध्यम से जो महत्व दिया गया है उससे यह पता चलता है कि प्रशासन में राजभाषा हिन्दी के सही कार्यान्वयन का दायित्व हम सभी पर है। उपस्थित प्रबुद्ध सदस्यों के परिचय से पता चलता है कि हिन्दी सलाहकार समिति का कितना महत्वपूर्ण दायित्व है। इतने महत्वपूर्ण दायित्व के बाद हमें यह देखना है कि राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में प्रगति हो रही है या हम पिछड़ रहे हैं। पिछले महीनों में मैंने करीब 12-13 देशों का दौरा किया तथा विश्व स्वास्थ्य सभा (WHA) तथा विश्व आर्थिक मंच (WEF) में भाग लिया। लेकिन मैंने महसूस किया कि अंग्रेज़ी इतनी ज़रूरी नहीं है।

एक बार माननीय प्रधानमंत्री जी ने मुझसे कहा था कि यह ज़रूरी नहीं है कि आप अपनी अच्छाई बताने के लिए अंग्रेज़ी में ही अपना भाषण दें। आप कोई भी भाषा धीरे-धीरे सीख

सकते हैं। आपको जैंटलमैन दिखने के लिए अंग्रेज़ी में भाषण देना ज़रूरी नहीं। मेरा भी मानना है कि जैंटलमैन देखने के लिए अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैं कभी भी अपना भाषण अंग्रेज़ी में देता हूँ लेकिन मैं अंग्रेज़ी अच्छी तरह से जानता हूँ। यदि आप अंग्रेज़ी जानते हैं तभी आपका प्रदर्शन अच्छा होगा, मैं ऐसा नहीं मानता हूँ। मैं ने अपने कार्य में कभी अंग्रेज़ी को वरीयता नहीं दी और इससे मेरे कार्यनिष्पादन में कभी कमी नहीं आयी। मेरा मानना है कि आपको जो भी भाषा अच्छे से आती हैं, जिसमें आप सहूलियत महसूस करें उस भाषा का प्रयोग करें। राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने से देश में एक समान भाव तथा अभिव्यक्ति का वातावरण बनता है।

महात्मा गांधी जी ने हिन्दी प्रचार के संबंध में कहा था कि जैसे व्यक्ति की आत्मा शरीर में होती है, वैसे ही राष्ट्र की आत्मा भाषा में होती है। इस तरह राजभाषा हिन्दी आत्मीयता से जुडने का साधन हैं। हिन्दी सलाहकार समिति का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों से मेरा आग्रह है कि आप अपनी जो भी फाइल हमारे पास भेजे वो केवल राजभाषा हिन्दी में ही भेजें। इससे मंत्रालय के कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा मिलेगा तथा हम अपने सांविधिक दायित्वों को पूरा करने में भी सफल होंगे। मेरा मानना है कि जिन्हें हिन्दी नहीं आती वह सीखने का प्रयास करें। प्रयास करने से कोई भी भाषा सीखी जा सकती है। विश्व के विभिन्न विकसित देशों यथा-जर्मनी, फ़्रांस, जापान, रूस, चीन आदि देशों में अपनी मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था है। हमें भी अपनी मेडिकल जैसी उच्च शिक्षा अपनी मातृभाषा में उपलब्ध करानी चाहिए और भारत सरकार इस दिशा में अग्रसर भी है।

*****

रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री, डॉ मनसुख मांडविया जी की अध्यक्षता में रसायन और उर्वरक मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति (रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग, औषध विभाग और उर्वरक विभाग की संयुक्त समिति) की बैठक दिनांक 23 जून, 2022 को पूर्वाह्न 10.00 बजे इंडिया हैबीटाट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में माननीय रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री श्री भगवंत खूबा जी, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य,सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हिंदी भाषा के विशेषज्ञ तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

समिति की बैठक का उद्देश्य मंत्रालय में और उसके अधीन कार्यालयों और उपक्रमों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति पर विस्तार से चर्चा करना है। माननीय मंत्री ने कहा है कि "देश के तीव्र विकास के लिए राष्ट्रीय संवाद में हिंदी के उपयोग की आवश्यकता है। इसके लिए हमें हिंदी भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। हिंदी के प्रयोग से हमारे सांस्कृतिक सामंजस्य और अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलेगा।" अध्यक्ष महोदय ने कहा कि

हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सरकारी काम-काज में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने और सही कार्यान्वयन का दायित्व हम सभी पर है।

माननीय रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री श्री भगवंत खुबा जी ने कहा कि भारत सरकार देश में हिंदी भाषा के उपयोग के प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में काम कर रही है। हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देना और जन सामान्य की भाषा बनाने के लिए हमें औपनिवेशिक काल की शब्दावली के स्थान पर दिनचर्या की भाषा के शब्दों को किया जाना ज़रूरी है। हमें राजभाषा हिंदी का विस्तार करके सबके लिए सुलभ बनाना है।

संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब जी ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अंग्रेज़ी के तकनीकी शब्दों, वैज्ञानिक शब्दों के लिए उपलब्ध हिंदी शब्दकोशों के प्रयोग करने का सुझाव दिया। माननीय सदस्य श्री रामनाथ ठाकुर जी ने विचार विमर्श के दौरान कहा कि बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों से आग्रह किया कि वे सभी संस्थाओं में हिंदी के काम-काज में उत्तरोत्तर वृद्धि को बनाए रखे। माननीय सदस्य श्री राम गोपाल यादव जी का सुझाव यह रहा कि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा यदि कार्य हिंदी में किया जाए तो मंत्रालय में हिंदी में स्वयं ही कार्य होने लगेगा। माननीय सदस्य श्री सतीश चन्द्र दुबे जी ने कहा कि सभी अधिकारीगण अपने कामकाज में, अपनी बैठकों में हिंदी को प्राथमिकता दें। माननीय सदस्य डॉ संघमित्रा मौर्य जी ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का आग्रह प्रकट किया। माननीय सदस्य डॉ दुर्गादत ओझा जी ने कहा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की सहायता से विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए। माननीय सदस्य डॉ अहिल्या मिश्र जी ने इस बात पर बल दिया कि दक्षिण भारत के लोगों की भाषा को अपनाए बिना उनसे हिंदी स्वीकार करने की आशा करना गलत है। इसके लिए अंग्रेज़ी, हिंदी के साथ ही "ग" क्षेत्र की शब्दों को जोड़कर शब्दकोश बनाए। माननीय सदस्य श्री पंकज दीवान जी का कहना है कि रसायन, उर्वरक, कीटनाशक एवं बीजों से संबंधित सूचना एवं उनके प्रयोग की विधि को किसानों तक हिंदी में पहुंचाए जाना है। माननीय सदस्य डॉ योगेश दुबे जी ने हिंदी के रिक्त पदों को शीघ्रातिशीघ्र भरने की कार्रवाई करने का अनुरोध किया। माननीय सदस्य श्री शरद अरविंद जोशी जी ने हिंदी में कार्य करने के लिए एक रणनीति बनाने पर ज़ोर दिया और सुझाव दिया कि अधिकारियों को फाइलों पर हिंदी में हस्ताक्षर करना है। माननीय सदस्य श्री प्रो(डॉ) त्रिभुवननाथ शुक्ल जी कहना है कि हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें अधिकतर "ख" एवं "ग" क्षेत्र में होना चाहिए। माननीय सदस्य

श्रीमती पल्लवी अनवेकर जी ने कहा कि वेबसाइट में हिंदी खुले और विकल्प के रूप में अंग्रेज़ी हो, तो इसका व्यापक असर पड़ेगा।

बैठक में अध्यक्ष महोदय और माननीय संसद सदस्यों के कर कमलों से मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों को हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रगामी प्रयोग को प्रोत्सासहित करने के लिए राजभाषा प्रशस्ति पत्र और राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। इसमें हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

*****

"आजादी का कोई अर्थ नहीं है यदि इसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हों।"

-महात्मा गांधी

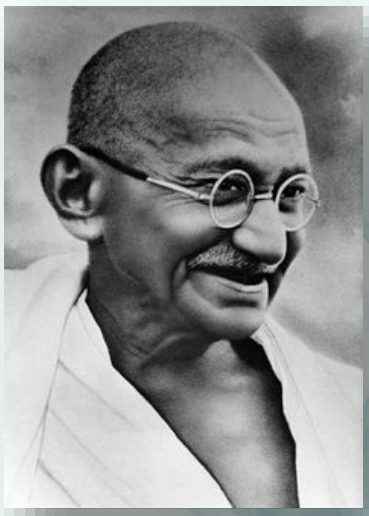

"भविष्य इस बात पर निर्भर करता है, कि आप आज क्या करते हैं।"

-महात्मा गाँधी

- असफलता -

-अखिल हरिकुमार
विद्युत विभाग

असफलता एक ऐसा शब्द है जिसे हम में से अधिकांश लोग सुनना भी पसंद नहीं करते हैं। लेकिन मेरा विश्वास करो यह सुंदर है। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जो एक असफलता से पूरी तरह से बदल गया था।

अपने बचपन के दिनों में यानी 10 वीं कक्षा तक मैं एक शांत छात्र था, जो केवल पढ़ना जानता है। मैंने किसी भी कार्यक्रम में भाग भी नहीं लिया क्योंकि मैं बहुत शर्म आया और इस डर में था कि अगर मैं अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया तो दूसरे मेरे बारे में क्या सोचेंगे। यही वह विचार था जिसने मुझे उन यादों से पीछे की ओर ले जाया जो मैं स्कूल के दिनों में बना सकता था। लेकिन इस सोच के साथ मेरी भी एक ख्वाहिश थी। मेरी इच्छा हाउस कैप्टन बनने की थी। मेरे स्कूल में आमतौर पर 11 वीं कक्षा के छात्रों में से कप्तानों का चयन किया जाता था। कप्तानी एक चुनावी प्रक्रिया है।

इसी इच्छा के साथ मैंने नामांकन दिया, और आगे की सभी प्रक्रियाएं जैसे चुनाव प्रचार, वार्ता आदि मेरे द्वारा पूरी की गई थीं। मेरा विरोधी भी मेरे जैसा ही था। उसने भी मेरे

जैसे कार्यक्रमों में कभी भाग नहीं लिया। इसलिए मुझे अपनी सफलता पर पूरा भरोसा था। परिणाम के लिए 3 दिनों का इंतजार खत्म हो गया। हमेशा की तरह मैं स्कूल गया था। परिणाम का समय आ गया और यह विफलता थी। मैं उस समय की भावना को व्यक्त नहीं कर सका क्यों कि यह मेरे स्कूल में मेरी पहली विफलता थी। मैं घर वापस गया और यह सोचकर बहुत दुखी हुआ कि मैं अगले दिन स्कूल कैसे जाऊंगा। उस दिन की रात मैं बस उन यादों को याद करना शुरू कर देता हूं जो मैंने चुनाव के समय की थीं, जिस से मैं परिणाम के बारे में भूल गया। इसलिए मैंने सोचा कि मैं असफलता पर दुखी क्यों हो मेरे पास बहुत खूबसूरत यादें थीं।

इसलिए हमेशा की तरह मैं बहुत सकारात्मक सोच के साथ स्कूल गया। उस दिन मेरे शिक्षक ने स्कूल में एक कार्यक्रम की एंकरिंग करने के लिए कहा क्यों कि चुनाव प्रचार भाषण के दौरान उन्होंने एंकरिंग के लिए मेरी आवाज को अच्छा पाया। वहां से मेरा जीवन बदल गया, मेरा आत्मविश्वास का स्तर बढ़ा, मेरा मंच भय कम हो गया और आत्मविश्वास के साथ चीजों को ठीक से करने में सक्षम हो गया।आज अगर मैं किसी के सामने खड़ा हो सकता हूं, तो आत्मविश्वास से बोलें अगर मैं कार्यक्रमों का समन्वय कर सकता हूं तो यह केवल विफलता के कारण है। मैं हमेशा सोचता हूं कि अगर मैं उस चुनाव में सफल हुआ तो मेरा जीवन क्या होगा क्यों कि अगर मैं सफल हुआ तो मैं उस सामान्य जीवन को जारी रख सकता हूं जो पहले था। इसलिए अपने अनुभव से मैं इस कथन से सहमत हूं कि असफलता सफलता की कुंजी है। यह याद हमेशा मेरे दिल के करीब होती है क्यों कि यह असफलता मुझे वह सफल इंसान बनाती है जो मैं आज हूं।

*****

"अकेले चलना सीख लो, जरूरी नहीं जो आज तुम्हारे साथ है वो कल भी तुम्हारे साथ रहे।"

-ए पी जे अब्दुल कलाम

यादें बंद रखी है

-अरुण एम वी
कार्यालय सहायक (हिंदी)

मेरे दिल में
दो तरह की यादें
बंद करके रखी है,
एक तो बुरा है
तो दूसरा अच्छा
दोनों मेरे लिए
पसंदीदा बात है
क्योंकि बुरा नहीं है तो
अच्छा भी नहीं है
और अच्छा नहीं है तो
बुरा भी नहीं है ।
बुरी याद अकेलेपन में
सबसे पहले आती है
मुश्किल से याद करने से
अच्छी यादें पास आती है ।
बुरी यादें हरदम मेरे साथ है
और वह मेरा साथी भी है
अच्छी यादें याद करने पर
आनेवाला मेहमान है ।

*****

स्वतंत्रता सेनानी का सम्मान

वी. पी. अप्पुकुट्टा पोदुवाल (जन्म 9 अक्टूबर 1923) भारत के स्वतंत्रता सेनानी है और केरल के गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं।

प्रारंभिक जीवन

पय्यन्नूर संस्कृत शिक्षणशाला और बेसल मिशन स्कूल, पय्यन्नूर में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, वी. पी. अप्पुकुट्टा पोदुवाल ने लखनऊ विश्वविद्यालय और बाद में मैसूर विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया।

जीवनवृत्त

वर्ष 1934 में महात्मा गांधी की पय्यन्नूर यात्रा के दौरान उनके साथ हुई बैठक ने अप्पुकुट्टा पोदुवाल के जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया। अस्पृश्यता के खिलाफ एक मजबूत आवाज स्वामी आनंद तीर्थ के निमंत्रण पर गांधीजी ने पय्यन्नूर यात्रा की। स्वामी आनंद तीर्थ और राघवजी से प्रभावित पोदुवाल, जो उन 78 लोगों में शामिल थे, जिन्होंने गांधीजी, स्वतंत्रता सेनानी और कवि ए.वी. श्रीकंठ पोदुवाल के साथ नमक मार्च में भाग लिया था। ए.वी. श्रीकंठ पोदुवाल पय्यन्नूर में नमक मार्च में एक प्रमुख व्यक्ति थे। वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, कोजिक्कोड और कन्नूर में छात्र सभाओं में व्याख्यान देने के लिए पोदुवाल को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किया गया था, जिसके लिए उन्हें केंद्रीय जेल, कन्नूर में दो सप्ताह के लिए कैद किया गया था। व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से, उन्होंने अपना

जीवन खादी और गांधीवाद को समर्पित कर दिया। 1944 में वे चरखा संघ की केरल शाखा में शामिल हो गए। 1946 में मातृभूमि आज़चपतिप्पू (साप्ताहिक) के कवर पर भारत माता की जो तस्वीर उन्होंने खींची थी, उसे कला में शामिल किया। 1947 में, वह तत्कालीन मद्रास सरकार के तहत पय्यन्नूर में ऊर्जिता खादी केंद्र के प्रभारी बने। उन्होंने विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण के साथ भूदान आंदोलन में भाग लिया। 50 के दशक की शुरुआत में, एक पत्रकार के रूप में डेक्कन हेराल्ड के लिए काम करते हुए, उन्होंने पय्यन्नूर में जयप्रकाश नारायण के भाषण को कवर किया। 1957 में, उन्होंने कालडी में आयोजित नौवें सर्वोदय सम्मेलन के कार्यालय की देखभाल की। 1962 में, पोदुवाल खादी ग्रामोद्योग आयोग के कर्मचारी बन गए। उन्होंने गांधी स्मारक निधि के कार्यकारी अधिकारी, भारतीय संस्कृति प्रचार सभा के सचिव, संस्कृत महाविद्यालय पय्यन्नूर के प्रधानाचार्य और पय्यन्नूर सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है।

पुरस्कार

2013: जी कुमारा पिल्लई - आई.एम. पूर्णोदय बुक ट्रस्ट द्वारा स्थापित वेलायुधन पुरस्कार
2007: विश्वसंसरिथा प्रतिष्ठानम केरलम भारती द्वारा "सहृदयतिलकम" पुरस्कार

*****

बुकर पुरस्कार विजेता - गीतांजलि श्री

गीतांजलि श्री (जन्म 12 जून 1957) हिन्दी की जानी मानी कथाकार और उपन्यासकार हैं। उत्तर-प्रदेश के मैनपुरी जनपद में जन्मी गीतांजलि की प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई। बाद में उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू विश्वउविद्यालय से इतिहास में एम.ए. किया। महाराज सयाजी राव विवि, वडोदरा से प्रेमचंद और उत्तर भारत के औपनिवेशिक शिक्षित वर्ग विषय पर शोध की उपाधि प्राप्त की। कुछ दिनों तक जामिया मिल्लिया इस्लामिया विवि में अध्यापन के बाद सूरत के सेंटर फॉर सोशल स्टडीज में पोस्ट-डॉ टरल रिसर्च के लिए गईं। वहीं रहते हुए उन्होंने कहानियाँ लिखनी शुरू कीं।

प्रकाशित रचनाएं

उनकी पहली कहानी बेलपत्र 1987 में हंस में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद उनकी दो और कहानियाँ एक के बाद एक 'हंस` में छपीं। अब तक उनके पाँच उपन्यास-'माई`, 'हमारा शहर उस बरस`, 'तिरोहित` ,'खाली जगह', 'रेत-समाधि' प्रकाशित हो चुके हैं; और पाँच कहानी संग्रह - 'अनुगूंज`, 'वैराग्य`,'मार्च, माँ और साकूरा', 'यहाँ हाथी रहते थे' और 'प्रतिनिधि कहानियां'

प्रकाशित हो चुकी हैं। 'माई' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'क्रॉसवर्ड अवार्ड' के लिए नामित अंतिम चार किताबों में शामिल था। 'खाली जगह' का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा में हो चुका है। अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यिक्ति के जरिए उन्होंने एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

शोध ग्रंथ

इनका एक शोध ग्रंथ बिटविन टू वर्ल्डस - एन इंटलैक्चुअल बायोग्राफी ऑफ़ प्रेमचंद प्रकाशित है।

पुरस्कार

दिल्ली की हिंदी अकादमी ने उन्हें 2000-2001 के साहित्यकार सम्मान से अलंकृत किया है। 1994 में उन्हें अपने कहानी संग्रह अनुगूँज के लिए यू के कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। इनको इंदु शर्मा कथा सम्मान, द्विजदेव सम्मान के अलावा जापान फाउंडेशन, चार्ल्स वॉलेस ट्रस्ट, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और नॉन्त स्थित उच्च अध्ययन संस्थान की फ़ेलोशिप मिली है। ये स्कॉटलैंड, स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस में राईटर इन रेज़िडेंसी भी रही हैं।

साल 2022 के अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। लेखिका गीतांजलि श्री अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतने वाली पहली हिंदी लेखिका बन गई है। ऐसा पहली बार हुआ है कि हिंदी में पहली बार किसी को बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया हो।

उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा का मानना है कि यह सच है, जो हुआ है वो अब तक नहीं हुआ था लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि यह मूल कृति की जगह अनूदित कृति को दिया गया पुरस्कार है। अगर अंग्रेज़ी में अनुवाद न हुआ होता तो क्या 'रेत समाधि' की उतनी ही चर्चा होती जितनी आज हो रही है। यह हिंदी के लिए बड़ी घटना है। गीतांजलि श्री को 'इंटरनेशनल बुकर प्राइज़' मिलने पर साहित्यकारों और आलोचकों का कथन इस प्रकार वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी -, "यह हिंदी के लिए बहुत बड़ी घटना है। हिंदी भाषा की जो रचनाधर्मिता है, यह उसका उदाहरण हैं। पूरे देश को इस पर गर्व होना चाहिए और हो रहा है। आलोचक अशोक वाजपेई का मानना हैं "हिंदी को ऐसी अंतरराष्ट्रीय मान्यता पहले कभी नहीं मिली"। कृष्ण बलदेव वैद, कृष्णा सोबती, अज्ञेय आदि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हैं लेकिन हमारे जीवित रहते किसी को यह पुरस्कार मिलते देखने बहुत बड़ी बात है।

वरिष्ठ कथाकार चित्रा मुद्गल कहती हैं, "हमें अनुवाद बनाम मूल कृति के विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यह हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए गौरवशाली क्षण है और मैं इसे पूरी तरह हिंदी का सम्मान मानती हूं क्योंकि कृति पहले आती है और अनुवाद बाद में।

हिंदी कवयित्री अनामिका ने बताया, "गीतांजलि की सबसे बड़ी ताक़त है कि वो 'माई' जैसे उपन्यास में ग्रामीण और कस्बाई जैसे परिवेश की कश्मकश सामने रखती हैं फिर 'तिरोहित' में मनोवैज्ञानिक स्तर पर उतरती हैं, 'हमारा शहर उस बरस' में बाबरी के माध्यम से राजनीतिक तनावों पर डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म की तरह पाठ तैयार करती हैं और 'रेत समाधि' में वृद्ध स्त्री के ज़रिये बुढ़ापे का ठस्सा और युग का प्रतिनिधित्व करवाती हैं। कह सकते हैं कि गीतांजलि के कथानक की स्त्रियां पूरे हिंदुस्तान की स्त्रियों की अव्यक्त इच्छाओं का दस्तावेज़ हैं।

(साभार -बीबीसी हिंदी)

*****

सकारात्मक होने के लिए 10 बातें

-उषा पी आर
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

1. खुद को दूसरे लोगों की नजरों से न देखें।
2. हमेशा एक समय एक ही चीज पर ध्यान केंद्रित करें। की गई बात पर अधिक ध्यान दें।
3. अशुभ चीज़ों को छोड़ दें। ऐसे संघों से दूर रहें जो सुख और शांति नहीं लाते।
4. किसी व्यक्ति का मूल्यांकन पहली मुलाक़ात में न करें।
5. 'अहंकार' छोड़ दें और इस भावना को भी छोड़ दें आप किसी काम के लायक़ नहीं हैं।
6. साथी प्राणियों से प्यार करो। सभी को बराबर के रूप में देखें।
7. किसी भी संकट में उसके भीतरी प्रकाश की खोज करें। समस्याओं को चुनौतियों के रूप में स्वीकार करें।
8. हमेशा सकारात्मकता सोच रखें। जीवन एक लंबी यात्रा है, हर चीज में केवल सर्वश्रेष्ठ की खोजें करें।
9. हमेशा आभारी और याददाश्त रहें।
10. हमेशा खुश रहें और इसे दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करें।

सब पहले इसका अभ्यास करें। पहली चीज जिसे बदलने की जरूरत है वह हमारे भीतर है।

*****

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति द्वारा 11.07.2022 से 14.07.2022 तक मुंबई स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में नवीं मुंबई स्थित हमारे निगमित एवं पंजीकृत कार्यालय भी शामिल था। हमारे कार्यालय का निरीक्षण 11.07.2022 को मध्याह्न 12.15 को सम्पन्न हुआ। इस बैठक में माननीय समिति के संयोजक के रूप में श्री रामचंद्र जांगड़ा जी और माननीय सदस्यों के रूप में श्री श्रीरंग आप्पा बारणे जी, श्री श्याम सिंह यादव जी,श्री अशोक कुमार यादव जी और श्री इरण्ण कडाडि जी उपस्थित रहे थे और समिति सचिवालय के अधिकारीगण भी रहे थे।

बैठक में एचओसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर विचार किया गया और माननीय सदस्यों द्वारा काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का सुझाव दिया गया और कंपनी की तरफ से समिति को आश्वासन भी दिया गया। इसके अतिरिक्त समिति ने प्रश्नावली पर "ध्यान देने योग्य बातों" की सूची भी दी और राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने का निर्देश भी दिया।

इस बैठक में कंपनी की तरफ से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री सजीव बी, निदेशक (वित्त) श्री योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला, महा प्रबन्धक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री राजेश कुमार, प्रबन्धक (राजभाषा एवं प्रशासन) श्री रमेश ओ उपस्थित रहे।

रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उप महा निदेशक श्री एन के संतोषी जी, उप निदेशक राजभाषा श्री राकेशकुमार जी और वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री रामानुज गौतम जी उपस्थित रहे।

समिति की निरीक्षण बैठक कार्य का समन्वयन ओएनजीसी द्वारा किया गया और समिति के पाँच दिवसीय निरीक्षण बैठक कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए ओएनजीसी के प्रति आभार व्यक्त किया।

हिन्दी दिवस 2022 एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने एवं उत्कृष्ट कार्यान्वयन किए गए सरकारी संगठनो को पुरस्कार प्रदान करने के लिए 14-15 सितम्बर 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत, गुजरात में हिन्दी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह मुख्य अतिथि रहे थे, माननीय मुख्यमंत्री गुजरात सरकार, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों, गुजरात सरकार के मंत्रियों सहित विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों ने इस दो दिवसीय सम्मेलन में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में प्रतिनिधियों के रूप में पूरे भारत के विभिन्न केंदीय सरकारी कार्यालयों, बैंक, उपक्रम के करीब 8 हज़ार अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान विभिन्न विषयों पर पाँच अलग-अलग सत्र का आयोजन किया जिसमें राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष भृतहरि महताब व समिति के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया, सीबीएफसी, मुंबई के अध्यक्ष प्रसून जोशी ने भाग लिया।

हिन्दी भाषा

-अनिल अशोक सालुंके
अधिकारी (प्रशासन)

हिंदुस्तानी हम, राष्ट्रभाषा है हमारी
गर्व से कहो और बोलो हिन्दी भाषा है हमारी।
भारत देश में रहे एकता हिन्दी सब की प्राथमिकता
नाज़ है हमें, हिन्दी भाषा पर
राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनने पर
अंग्रेजी भाषा का करते है प्रयोग
हिन्दी का करे सभी जगह उपयोग
सब करते है गुजारिश हम सब की है ख्वाईश
भारत देश को समृद्ध बनाना है
प्रगति पथ पर लेकर जाना है
मिलजुलकर रहना है हिन्दी भाषा को अपनाना है
हिन्दी भाषा का करे विचार राष्ट्रभाषा का करे प्रचार
हिन्दी भाषा का पढे अखबार रोज सुनिये हिन्दी समाचार
सब को देते है पैगाम राष्ट्रभाषा को करे सलाम
सभी भाषाओं का कीजिए आदर हिन्दी का ना करे अनादर
आन, बान, शान हिन्दी सब के ऊपर विराजमान
हम मांगते है मन्नत राष्ट्रभाषा को बनाओ जन्नत
राष्ट्रभाषा की उन्नति भारत देश की प्रगति
हम करते है मतदान हिन्दी भाषा है वरदान
हिन्दी भाषा है सब से भारी सब से न्यारी सब से प्यारी
सब से प्रिय, सब से सुंदर हिन्दी आज की है, सिकंदर
अपने देश का विकास हिंदी सब से झकास
बस और क्या और क्या
हिन्दी है, हम सब की जान।

*****

स्वच्छ भारत अभियान - गतिविधियां

भारत सरकार ने स्वच्छ और स्वस्थ कार्यस्थल सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित कर 02 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया। एचओसीएल द्वारा अक्तूबर 2014 से स्वच्छ भारत अभियान मनाया जाता है और एचओसीएल हर साल 1 से 15 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा मना रहा है। विभिन्न गतिविधियों के अलावा, कार्य योजनाओं के अनुसार स्वच्छता और स्वास्थ्य पर जागरूकता सत्र आयोजित किया गया, कोविड महामारी की स्थिति पर विशेष जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया। परिसर की सफाई के लिए विभिन्न अभियान चलाए गए, पुराने फाइल का निपटान, सामग्री को अलग करना, स्क्रैप आइटम का निपटान आदि कार्य चलाया गया। टाउनशिप क्षेत्र में भी स्वच्छता की कार्रवाई की गई।

प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए भारत सरकार के निर्देशों के अनुरूप और पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के रूप में, हमने पहले ही अपने कारखाने और टाउनशिप को "प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र" घोषित कर दिया है। पहले चरण में प्लास्टिक से बनी सभी प्रकार की सिंगल यूज सामग्री जैसे कैरी बैग, बोतल, कप, कंटेनर आदि को फैक्ट्री और टाउनशिप परिसर में प्रतिबंधित कर दिया गया था।

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत फैक्ट्री और टाउनशिप में प्रमुख स्थानों पर बैनर प्रदर्शित किए गए। आजादी का अमृत महोत्सव के लोगो का व्यापक प्रचार हमारी वेबसाइट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आदि के माध्यम से समय-समय पर किया जाता है। आजादी का अमृत महोत्सव पर स्टिकर तैयार किए गए और सभी सरकारी पत्राचार में चिपकाए गए। "आजादी का अमृत महोत्सव" पर वेबिनार और विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को हर साल विभिन्न गतिविधियों के साथ मनाया जाता है जैसे पेड़ पौधे लगाना, भाषण, जागरूकता कार्यक्रम आदि। वर्ष 2022 के लिए स्वच्छता पखवाड़ा एचओसीएल में 1 से 15 सितंबर 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया है। 'स्वच्छता पखवाड़ा 2022' लोगो के साथ टोपियां शिक्षुओं, प्रशिक्षुओं और आकस्मिक श्रमिकों सहित सभी कर्मचारियों को वितरित की गईं । यह कार्य केवल पखवाड़े पर सीमित नहीं है बल्कि समय समय पर स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

*****

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 और भारतीय भाषाएँ

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को मजबूत करने की रणनीति तैयार की है। भारतीय संविधान में भारत सरकार को यह कर्तव्य दिया गया है कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करें। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को राष्ट्रभाषाओं का दर्जा दिया गया है। सरकार इन 22 भाषाओं के विकास के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। वर्तमान में गुलामी के सभी चिह्न को समाप्त करने की सरकार की पहल के सिलसिले में शिक्षा के क्षेत्र में भी भारी परिवर्तन हो रही है। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान मिलने जा रहा है। इस नीति में पाँचवीं कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा या प्रथम भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाएगी। यह सर्वविदित है कि मातृभाषा में शिक्षा देने से छात्र अच्छी तरह समझ सकते है, विषयों को आसानी से ग्रहण कर सकते हैं। दूसरी भाषा में जो ज्ञान अर्जित करने से बेहतर है मातृभाषा में उसे समझना। दुनिया के अधिकांश राष्ट्रों में पढ़ाई मातृभाषा में होती है। भारत सरकार अंग्रेज़ी के विकल्प के रूप में भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता बढ़ाना चाहती है। उच्च शिक्षा में अंग्रेज़ी के वर्चस्व को समाप्त करने के लिए इंजीयरिंग और मेडिकल शिक्षा भी हिन्दी में देने के लिए कार्रवाई की जा चुकी है। पहले से शिकायत यह रही है कि भारतीय भाषाओं या हिन्दी में शिक्षा देने के लिए बुनियादी सुविधाएं जैसे किताबें, योग्य अध्यापक और पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है। आजकल प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग इसके लिए किया जा सकता है। बच्चों का पूर्ण रूप से विकास और उन्हें विश्वस्तर पर सशक्त बनाने के लिए तैयार की गई नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को नई ऊर्जा मिलेगी। भाषा का अस्तित्व प्रयोग करने में है, वैसे भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की पहल इन भाषाओं को बनाए रखने में और नया जीवन प्रदान करने में सहायक स्थापित होगा। नई शिक्षा नीति में भाषा के बारे में व्यक्त विचारों उसका कुछ अंश इस प्रकार है: “22.6- वे भारतीय भाषाएँ भी, जो आधिकारिक रूप से लुप्तप्राय की सूची में नहीं हैं- जैसे आठवीं अनुसूची की 22 भाषाएँ, वे भी कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर रही है।

भारतीय भाषाओं के शिक्षण और अधिगम को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। भाषाएँ प्रासंगिक और जीवंत बनी रहें इसके लिए इन भाषाओं में उच्चतर गुणतापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बने रहना

चाहिए- जिसमें पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, विडिओ, नाटक, कविताएं, उपन्यास, पत्रिकाएँ आदि शामिल है।

आठवीं अनुसूची की भाषाएँ - भारत की राष्ट्रभाषाएँ

1. असमिया	2. उडिया	3. उर्दू	4. कन्नड
5. कश्मीरी	6. गुजराती	7. तमिल	8. तेलुगु
9. पंजाबी	10. बंगला	11.मराठी	12.मलयालम
13.संस्कृत	14.सिंधी	15.हिंदी	16.नेपाली
17.कोंकणी	18.मणिपुरी	19.बोडो	20.संथाली
21.मैथिली	22.डोग्री		

*****

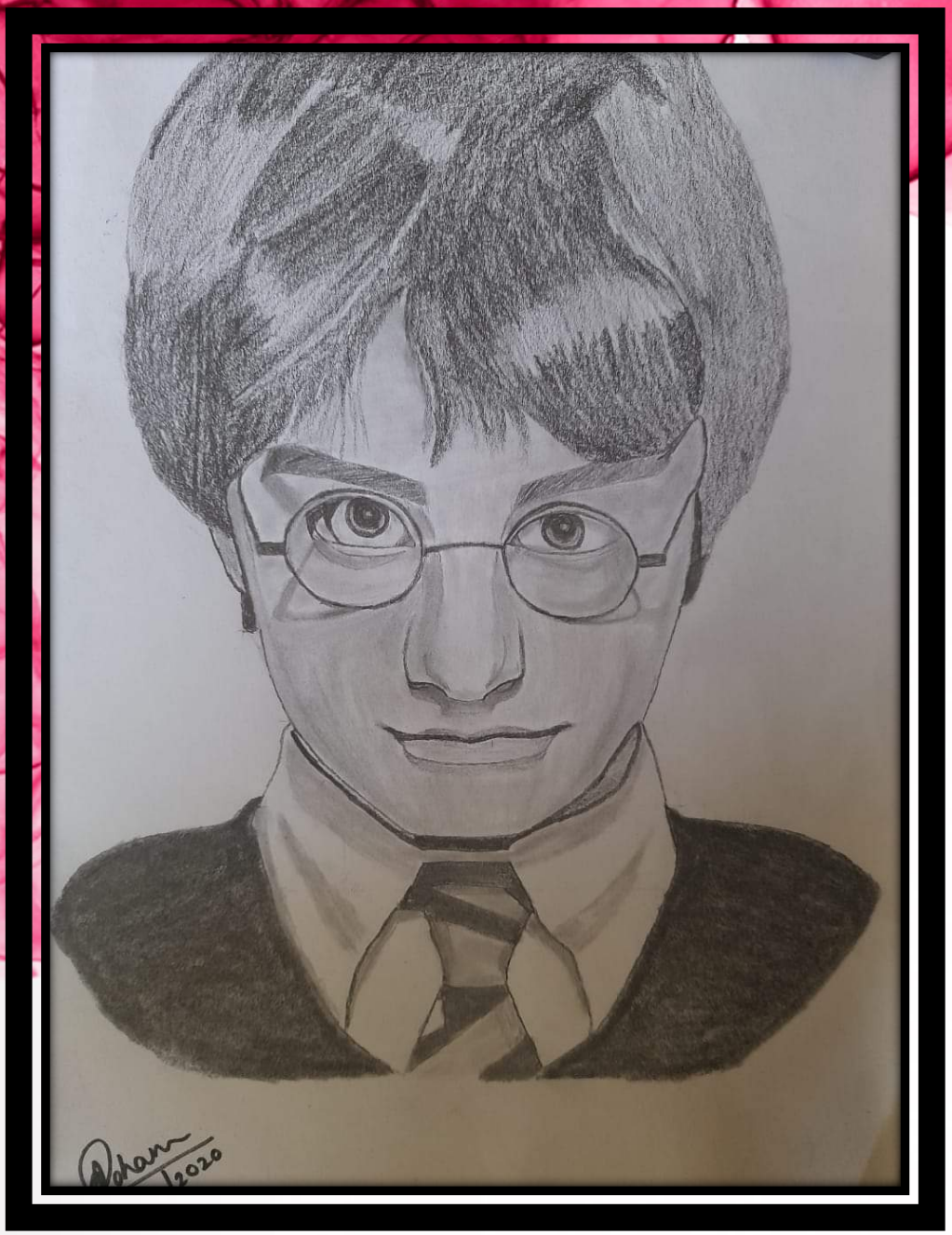

छाया चित्र - हारि पोट्टर

- सोहम पेंढारकर

(नितिन पेंढारकर का बेटा, निगमित कार्यालय, नवीं मुंबई)

हिन्दी भाषा - अनमोल विचार

- संस्कृत मां, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है – फादर कामिल बुल्के
- हिंदी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी – डॉ .जाकिर हुसैन
- सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है – लोकमान्य तिलक
- भारतीयता का दूसरा नाम हिंदी है – भगवतीचरण वर्मा
- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है – महत्मा गॉधी
- राष्ट्रभाषा के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ – डॉ .राजेंद्र प्रसाद
- हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है – सुमित्रानन्दन पंत
- हिंदी भाषा हमारा प्रतिबिंब है - महत्मा गॉधी
- हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति - रामवृक्ष बेनीपुरी

*****

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

ओणोत्सव - 2022

विनोदकुमार के वी
कल्याण अधिकारी

ओणम केरल का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। ओणम सिर्फ संजोने का त्योहार नहीं है बल्कि समृद्धि और अच्छाई के एक हिस्से को फिर से जन्म देने का क्षण है। पिछले कुछ वर्षों में एचओसीएल में ओणम के संबंध में कोई विशेष कार्यक्रम और सभा नहीं हुई थी। इस साल एचओसी ऑफिसर्स क्लब और एचओसी रिक्रिएशन क्लब ने ओणम को पूरे जोश के साथ मनाने का फैसला किया है और 18.09.2022 को पूरे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया है। क्लबों ने संयुक्त रूप से प्रबंधन के पूर्ण समर्थन और सहयोग के साथ विभिन्न प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रमों की व्यवस्था की।क्लबों ने सदस्यों और परिवार के लिए रस्साकशी और पूक्कलम प्रतियोगिता सहित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारम्भ सामुदायिक हॉल तक एक जुलूस के साथ हुआ। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन हमारे सीएमडी श्री बी सजीव ने निदेशक वित्त श्री योगेंद्र प्रसाद शुक्ला की उपस्थिति में किया। सांस्कृतिक बैठक के बाद नृत्य के अनूठे रूप तिरुवातिरक्कली का आयोजन किया गया। वर्ष 2022 के उत्सव में हमारी संस्था के नौजवानों ने नृत्य संगीत सहित विभिन्न प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रमों का पूरे मनोयोग से प्रदर्शन किया। वहां इकट्ठे हुए परिवार के लिए यह वास्तव में एक रोमांचकारी और करामाती अनुभव था। संक्षेप में 18/09/2022 को क्लबों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ओणोत्सव 2022 एचओसीएल के इतिहास में एक यादगार दिन था।

एचओसी ऑफिसर्स क्लब की ओर से उत्सव 2022 के सफल आयोजन में योगदान देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सलाम।

राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम - 2022-23

हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	क क्षेत्र नई दिल्ली सहित हिंदी राज्य	ख क्षेत्र महाराष्ट्र, गुजरात एवं पंजाब	ग क्षेत्र दक्षिण सहित अन्य राज्य	क एवं ख क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति
"ग" क्षेत्र से	55%	55%	55%	55%
"ख" क्षेत्र से	90%	90%	55%	90%

1. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में देना अनिवार्य है-100%
2. हिंदी में टिप्पण "ख"क्षेत्र में 50% और 'ग' क्षेत्र में 30%
3. हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम "ख" क्षेत्र में 60% और 'ग' क्षेत्र में 30%
4. हिंदी टंकक और आशुलिपिकों की भर्ती "ख" क्षेत्र में 70% और 'ग' क्षेत्र में 40%
5. हिंदी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण "ख" क्षेत्र में 55% और 'ग' क्षेत्र में 30%
6. हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि) "ख" और 'ग' क्षेत्रों में 100%
7. द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना- "ख" और 'ग' क्षेत्रों में 100%
8. हिंदी में पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय डिजिटल वस्तुओं सहित "ख" और 'ग' क्षेत्रों में 50%
9. कम्प्यूटर सहित इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद "ख" और'ग' क्षेत्रों में 100%
10. वेबसाइट द्विभाषी हो-100%
11. नागरिक चार्ट तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो-"ख" और'ग' क्षेत्रों में 100%
12. कार्यालय/मंत्रालय द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण-25% न्यूनतम
13. मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण
14. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति-वर्ष में 4 (चार) बैठकें
15. कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिन्दी अनुवाद-'ग' क्षेत्र में 100%
16. कार्यालयों के ऐसे अनुभाग जहां सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में हो "ख" क्षेत्र में 30% और 'ग' क्षेत्र में 20%

*****

नकाब आया

सूरज आई एस
वरिष्ठ अधिकारी

एक नकाब आयी कुछ महीनों पहले
कुछ महीने पेहले
अचानक चौराहों, सड़कों, में
नकाब आया
बीस बीस के बीच बीच से
निकल आया नकाब
हर आदमी के मुंह पे
नकाब आया मुंह की बाहर में
मानव जीवन नकाब आया है
नाक-दाँत सब बंद है अब
प्यार, मुस्कान, कर्ब, दर्द
सभी आंखों के जरिये
करने की आदत हो गयी है
नकाब आया है जान बचाने
साफ साफ रखना पहनते रखना
ना तो फिर आयेगा नकाब
मुछ पे नहीं, हसीन आँखों पे सदा के लिए ।

*****

संघ की राजभाषा नीति

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप है {संविधान का अनुच्छेद 343 (1)}। परन्तु हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सरकारी कामकाज में किया जा सकता है (राजभाषा अधिनियम की धारा 3)।

संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। {संविधान का अनुच्छेद 120}।

प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 11

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

   परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-2022

योग के प्रचार प्रसार में भारत सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। भारत की इस प्राचीन ज्ञान को विश्वभर में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था जिसका भारी बहुमत से स्वीकार किया गया। अधिकांश राष्ट्रों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। योग की शक्ति को पहचानकर विश्व में पहले से योग का प्रचार-प्रसार हो रहा था लेकिन जिस धरती में इसका जन्म हुआ था, वहाँ की जनताओं में इसका व्यापका प्रचार-प्रसार नहीं हुआ था।

दरअसल, सरकार की इस महत्वपूर्ण पहल ने योग के प्रति लोगों का विश्वास मजबूत किया। आजकल स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं, मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य घटक के रूप में योग की पहचान विश्व भर में फैल गयी है। आजकल योग अच्छी सेहत का पर्याय बन गया है। सरकार की इस पहल ने करोड़ों लोगों की जीवन शैली को बदल दिया है और योग को अपने जीवनचर्या के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया है।स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में योग के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता पैदा हो गयी।

यह पूरी दुनिया को एक नई जीवन प्रणाली प्रदान करती है। वर्तमान की भाग-दौड़ की ज़िंदगी में योग एक वरदान है। आजकल कार्यालयों, सोसाइटियों और सामाजिक संगठनों की तरफ से योग का व्यापक प्रचार-प्रसार करना इसकी प्रतिष्ठा का प्रमाण है। भारत सरकार द्वारा किए गए इस प्रचार-प्रसार से विश्व भर के करोड़ों जनताओं को फायदा मिली है। इसी क्रम में हमारे कार्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-2022 उत्साहपूर्व मनाया गया। इस कार्यक्रम में अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। योग सत्र का आयोजन भी किया गया।

हिल पैलेस संग्रहालय

- दीपा एस नायर
(प्रशिक्षु)

हिल पैलेस संग्रहालय केरल का सबसे बड़ा पुरातात्विक संग्रहालय है, जोकि कोच्चि शहर के पास त्रिपुनीथुरा नामक स्थान पर स्थित है। केरल को उसकी खूबसूरती के कारण गॉड्स ओन कंट्री के नाम से जाना जाता है। प्राचीनकाल में यह शाही पैलेस प्रशासनिक कार्यालय और कोचीन महाराजा का आधिकारिक निवास स्थान था। यह म्यूजियम अपनी सुंदरता और अद्भुत संरचना के कारण दुनियाभर में प्रसिद्ध है।

हिल पैलेस संग्रहालय का इतिहास

कोच्चि साम्राज्य की आधिकारिक राजधानी पहले त्रिशूर में स्थित थी और महाराजा के शाही कार्यालय के साथ अदालत भी शहर में ही स्थित थी। हालांकि, अनुष्ठानवादी रीति-रिवाजों के अनुसार, कोच्चि की रानी की सीट रॉयल राजधानी के रूप में देखी गई थी क्योंकि कोच्चि शाही परिवार में मैट्रिलिनल परंपराएं थीं और रानी को राज्य के संप्रभु के रूप में माना जाता था जिसके तहत राजा शासन करता था। साल 1755 के बाद से, रानी और उसके नौकर-चाकर भी त्रिपुनीथुरा में निवास करने लगे, जिससे इस शहर को वहां की आधिकारिक राजधानी बना दिया गया। बाद में राजकुमार राम वर्मा त्रिपुनीथुरा के राजा बन गए। साल

1865 में राजा के रहने के लिए एक शाही कार्यालय का निर्माण किया गया था। प्रारंभ में यह शाही कार्यालय, अदालत की इमारत और शाही सचिवों के महलों के कार्यालयों के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जल्द ही बहुत सी संरचनाओं को भी मुख्य संरचना में विभिन्न उद्देश्यों में जोड़ा गया था।

हिल पैलेस संग्रहालय के रोचक तथ्य

साल 1865 में निर्मित इस संग्रहालय परिसर में कुल 49 इमारतें है। कोच्चि शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित ये महल 54 एकड़ (220,000 वर्ग मीटर) में फैला हुआ है। इस अद्भुत महल में बनी सभी इमारतें समकालीन शैली को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं, जोकि पारंपरिक वास्तुकला शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। महल परिसर के अन्दर हिरन पार्क, पुरातात्विक संग्रहालय, बच्चों का पार्क, एक प्रागैतिहासिक पार्क और एक ऐतिहासिक संग्रहालय भी मौजूद है। इनके अलावा पैलेस के आँगन में कुछ दुर्लभ मसाले और जड़ी बूटियाँ भी देखी जा सकती हैं। इस महल के रखरखाव की जिम्मेदारी केरल राज्य पुरातत्व विभाग संग्रहालय को सौंपी गई है तथा उन्होंने महल की मूल स्थापत्य शैली को संरक्षित रखने का एक शानदार काम किया है। कोचिन रॉयल परिवार द्वारा इस महल को केरल सरकार को सौंप दिया गया था और साल 1980 में, महल पुरातत्व विभाग द्वारा ले लिया गया था और बाद में यह एक संग्रहालय में परिवर्तित हो गया। साल 1986 में इस पैलेस को आम जनता के लिए खोल दिया गया था। इस संग्रहालय का परिसर मलयालम फिल्म उद्योग की सबसे पसंदीदा जगहों में से एक है। इसी पैलेस में चर्चित मलयालम फिल्म मणिचित्रताज़ू के कुछ दृश्यों की शूटिंग भी की गई है। यहां पर 200 से ज्यादा बर्तनों और सिरामिक पात्रों के दुर्लभ नमूने भी प्रदर्शित किए गए हैं जो जापान और चीन से लाए गए हैं।

‘एचओसीएल मई दिवस खेल’ चित्रों के माध्यम से,

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हाइड्रोजन पेरोक्साइड - 6%

पर्यावरण के अनुकूल बहुउद्देश्यीय उत्पाद

पर्यावरण के अनुकूल हाइड्रोजन पेरोक्साइड अपघटन के दौरान ऑक्सीजन और पानी मुक्त करता है। यह प्रकृति में स्तन के दूध में भी पाया जाता है। डबल्यूबीसी रोगजनकों से लड़ने के लिए हाइड्रोजन पेरोक्साइड का भी उत्पादन करता है।
बारिश के पानी में मुख्य रूप से बिजली चमकने के समय पाया जाने वाला हाइड्रोजन पेरोक्साइड; यह वर्षा जल के उपचार प्रभाव के मुख्य कारणों में से एक है। यह दैनिक जीवन में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह कुछ हानिकारक रसायनों के उपयोग को कम करने में मदद करता है।

क. हाइड्रोजन पेरोक्साइड का कृषि उपयोग

1) जड़, तना और पत्ती रोगों के लिए: एक लीटर पानी (**0.23%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड) में **6%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड के **40** मिलीलीटर का छिड़काव करें।

2) बीज अंकुरण: बीजों को **1** लीटर पानी (**0.26%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड) से पतला **45** मिली **6%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड के घोल में लगभग **8** घंटे भिगोएँ। इस पूर्व उपचार में, बीज कीटाणुरहित हो जाते हैं और अनुपचारित की तुलना में **50-60%** बेहतर अंकुरित होते हैं।

3) अच्छी जड़ वृद्धि के लिए: **5** मिली **6%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड को **10** लीटर पानी (**30ppm** हाइड्रोजन पेरोक्साइड) में **10** प्रतिशत के लिए स्प्रे करें।

4) फूल प्रेरण के लिए: **25** मिली **6%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड को **200** मिली पानी (**0.67%** हाइड्रोजन पेरोक्साइड) में घोलें और फूल आने के लिए स्प्रे करें।

ख. हाइड्रोजन पेरोक्साइड का घरेलू उपयोग

1) साफ रसोई के लिए: **50** मिली हाइड्रोजन पेरोक्साइड - **6%** से **250** मिली पानी पतला करें और किचन के फर्श, सिंक, काउंटर टॉप आदि में स्प्रे करें और कुछ मिनट बाद इसे पोंछ लें। तब रसोई कीटाणुरहित हो जाएगी और ताजा हो जाएगी। यह इससे किसी भी तरह की दुर्गंध को दूर करने में भी मदद करता है। किचन में मौजूद पोछे और स्पंज को भी उसमें भिगोकर कीटाणुरहित और साफ किया जाना चाहिए।

2) वाश रूम में: **50** मिली हाइड्रोजन पेरोक्साइड - **6%** से **250** मिली पानी के साथ घोलें और टॉयलेट, सिंक, बाथ टब, दीवार आदि में कीटाणुनाशक के रूप में स्प्रे करें। यह दाग और दुर्गंध को दूर करने में मदद करता है।

3) कोरोना वायरस कीटाणुरहित करने के लिए: **100** मिलीलीटर हाइड्रोजन पेरोक्साइड **6%** से **200** मिलीलीटर पानी में घोलें और कोरोना वायरस कीटाणुरहित करने के लिए साफ निर्जीव सतह पर स्प्रे करें (डब्ल्यूएचओ की सिफारिश की)।

ग. हाइड्रोजन पेरोक्साइड का कृषि उपयोग

1) कीटाणुरहित फार्म के लिए: नवजात ऑक्सीजन विकसित करके फर्श और वातावरण को साफ करने के लिए पशु फार्म में 1 लीटर पानी (0.55% हाइड्रोजन पेरोक्साइड) में 6% हाइड्रोजन पेरोक्साइड के 100 मिलीलीटर के घोल का छिड़काव करें। यह खेत में गंदी गंध से बचने में भी मदद करता है। इसलिए पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार करें।

6% हाइड्रोजन पेरोक्साइड (H_2O_2) की अनुशंसित डोसेज / उपयोग			
विवरण	6% H_2O_2	पानी	ध्यान
क. कृषि उपयोग			
1. जड़, तना और पत्ती रोगों के लिए	40 मिली	1 लीटर	0.23%
2. बीज अंकुरण	45 मिली	1 लीटर	0.26%
3. अच्छी जड़ वृद्धि के लिए	5 मिली	10 लीटर	0.003%
4. फूल प्रेरण के लिए	25 मिली	200 मिली	0.67%
ख. कीटाणुशोधन के लिए घरेलू उपयोग:			
1. फ्लोर, किचन सिंक और वॉश रूम	50 मिली	250 मिली	1.00%
2. कोरोना वायरस कीटाणुरहित करने के लिए	100 मिली	200 मिली	2.00%
ग. कृषि उपयोग:			
1. पशु फार्म कीटाणुरहित करने के लिए	100 मिली	1 लीटर	0.55%

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एच ओ सी

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
भारत सरकार का उद्यम

हाइड्रोजन पेरोक्साइड 6%

आज़ादी का अमृत महोत्सव